शिक्षा, नैतिकता के विकास के रूप में

डॉ. भागीरथमल
व्याख्याता – लोकप्रशासन विभाग
राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर

सारांश:-

" **हरबर्ट -** शिक्षा के सम्पूर्ण कार्य को एक ही शब्द में प्रकट किया जा सकता है, और यह शब्द है नैतिकता।

प्लेटो- शिक्षा से अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है जो अच्छी आदतों के द्वारा बच्चों में अच्छी नैतिकता का विकास करता है।

शिक्षा, वैयक्तिकता के विकास की प्रक्रिया के रूप में- इस श्रेणी की परिभाषा देने वाले विद्वान वे हैं जो व्यक्ति की वैयक्तिकता को महत्व प्रदान करते हैं- "

मारीसन- शिक्षा सीखने की क्रिया द्वारा व्यक्ति का विकास है. यह उसके शारीरिक विकास से भिन्न है

रूसो— शिक्षा आनन्ददायक, तर्कयुक्त, संतुलित, उपयोगी और प्राकृतिक जीवन के विकास की प्रक्रिया है।

काण्ट - शिक्षा व्यक्ति की उस पूर्णता का विकास है, जिसकी उसमें क्षमता है।

टी०पी० नन- शिक्षा बालक की वैयक्तिकता का पूर्ण विकास है, जिससे वह अपनी पूर्ण योग्यता के अनुसार मानव जीवन को भौतिक योगदान दे सके।

शिक्षा, व्यक्ति तथा समाज दोनों के विकास के रूप में - अभी तक दी गई परिभाषायें व्यक्ति की दृष्टि से दी गई हैं- चाहे वे उसकी अन्तर्निहित शक्तियों के विकास पर बल देती हों या उसके आध्यात्मिक विकास पर या उसके व्यक्तिगत विकास पर। इन परिभाषाओं में समजा उपेक्षित रहा, किन्तु प्रस्तुत वर्ग की परिभाषाओं में व्यक्ति तथा समाज दोनों के विकास पर बल है-

ब्राउन- शिक्षा चैतन्य रूप में नियंत्रित प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन कर दिये जाते हैं, और व्यक्ति के द्वारा समाज में।

हैडरसन - यदि शिक्षा केवल बच्चों की अभिवृद्धि और विकास करती है तो वह सामाजिक विरासत की उपेक्षा करती है पर यदि 'शिक्षा' अभिवृद्धि और विकास की ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें सामाजिक वातावरण के रूप में सामाजिक विरासत को उत्तम और बुद्धिमान पुरुषों एवं स्त्रियों के विकास के लिए प्रयोग किया जा सके तो यह शिक्षा की वही प्रक्रिया है जिसका समर्थन दार्शनिकों और शिक्षा सुधारकों ने किया है और यही शिक्षा की सत्य धारणा है।

शिक्षा, सामाजिक वातारण से अनुकूलन की प्रक्रिया-रूप में - व्यक्ति के समाज से सामन्जस्य के बिना उसे शिक्षित नहीं कहा जा सकता। अतः व्यक्ति के सामाजिक पक्ष पर बल देने वाले शिक्षाशास्त्रियों ने इस वर्ग की परिभाषायें इस प्रकार दी है-

बासिंग - शिक्षा का कार्य व्यक्ति को अपने वातावरण के साथ इस प्रकार सामंजस्य स्थापित करने में सहायता देना है कि व्यक्ति तथा समाज दोनों उससे अधिकाधिक स्थायी सन्तोष प्राप्त कर सके। **जेम्स-** शिक्षा, कार्य सम्बन्धी अर्जित आदतों का संगठन है जो व्यक्ति का उसके भौतिक और सामाजिक वातावरण में उचित स्थान देती है।

शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन एवं नियन्त्रण के साधन के रूप में - शिक्षा की यह समाजशास्त्रीय परिभाषा, शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक नियन्त्रण के साधन के रूप में मानकर उसे राष्ट्रीय विकास का सशक्त साधन मानती है। भारतीय शिक्षा आयोग (1964-66) ने शिक्षा को सामाजिक क्रान्ति एवं राष्ट्रीय विकास का सशक्त साधन माना है।

शिक्षा, अनुभवों की रचना एवं पुनर्रचना की प्रक्रिया रूप में- अमेरिकी दार्शनिक जॉन डीवी ने शिक्षा को बहुत व्यापक आधार प्रदान करते हुए उसे अनुभवों की रचना तथा पुनर्रचना कहा है। उसके अनुसार वह व्यक्ति में उन समस्त क्षमताओं का विकास है जो उसको अपने वातावरण को नियन्त्रित एवं अपनी सम्भावनाओं को पूर्ण करने योग्य बनाती है। वह अन्य स्थान पर लिखता है कि शिक्षा के फलस्वरूप विवृद्ध वैयक्तिक कुशलता के माध्यम से पुनर्निर्माण को सामाजिक मूल्य प्रदान किया जाता है। इस तरह जॉन डीवी ने शिक्षा की संकीर्ण शक्ति को चारों ओर से निकालकर व्यापक धरातल पर स्थापित किया है। डीवी की परिभाषा के विश्लेषण करने पर 'शिक्षा' की इस तरह व्याख्या की जा सकती है-[1]

–शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है- क्योंकि अनुभव सम्पूर्ण जीवन से जुड़े हैं। शिक्षा से हमारे व्यवहार में परिवर्तन होता है क्योंकि यह अनुभवों की रचना एवं पुनर्रचना की प्रक्रिया है। अनुभवों के परिणामस्वरूप व्यवहार परिवर्तन होता है।

- शिक्षा से व्यक्ति की कुशलता में वृद्धि होती है। कुशलता– वृद्धि से समाज भी अप्रत्यक्षतः लाभान्वित होता है।

-व्यवहार-परिवर्तन से सामाजिक कुशलता ही नहीं अपितु सामाजिक नैतिकता का भी विकास होता है।

- शिक्षा-प्रक्रिया को विद्यालय या अवस्था विशेष तक ही सीमित नहीं किया जा सकता क्योंकि विद्यालय के बाहर भी तथा छात्रावस्था के बाहर भी व्यवहार परिवर्तन की प्रक्रिया स्वानुभाव एवं अन्यो की सहायता से चलती रहती है। परिवार, प्रेस, रेडियो, मित्र - मण्डली आदि सभी व्यवहार में परिवर्तन लाते हैं।

-उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि जॉन डीवी ने शिक्षा की अधिक व्यापक, व्यावहारिक एवं संकीर्णता मुक्त परिभाषा दी है। इसमें व्यक्ति के विकास के साथ-साथ समाज के विकास का भी समावेश है।

वातावरण (Environment)- शिक्षा की तीसरी महत्वपूर्ण सामग्री वातावरण है। प्रत्येक बालक का पालन-पोषण एवं विकास एक निश्चित वातावरण में होता है। इस वातावरण का उसके विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। वातावरण उस स्वस्थ पानी एवं जलवायु की तरह है जो कि बालक में अन्तर्निहित शक्तियों रूपी बीज को पूर्ण वृक्ष के रूप में विकसित करता है। वातावरण नहीं मिलने पर अनेक प्रतिभाएँ अविकसित ही मर जाती हैं। अतः बालक को जैसा भौतिक, सामाजिक वातावरण मिलता है, वैसी ही उसकी जन्मजात शक्तियाँ विकसित होती है। सारांश यह है कि जन्मजात शक्तियाँ यदि शिक्षा का आधार है तो वातावरण शिक्षा का माध्यम, खाद एवं जलवायु है और शिक्षा का फल है बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का अधिकतम विकास। इस कथन को इस प्रकार चित्रित किया जा सकता है-

शिक्षा-लक्ष्य– जन्मजात शक्तियों का अधिकतम विकास

शिक्षा-माध्यम- भौतिक एवं सामाजिक वातावरण

शिक्षा-आधार- जन्मजात शक्तियाँ

यो तो वंशानुक्रमवादी तथा वातावरणवादी अपनी-अपनी महत्ता सिद्ध करना चाहते हैं। किन्तु यह एक तथ्य है कि, व्यक्ति का व्यक्तित्व वंशानुक्रम तथा वातारण दोनों का गुणनफल होता है। [2]

शिक्षा के विभिन्न प्रकार -शिक्षा के अर्थ के स्पष्टिकरण की दृष्टि से शिक्षा के विभिन्न प्रकारों पर दृष्टिपात करना भी आवश्यक है। शिखा के कुछ प्रमुख प्रकार इस प्रकार है-

औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा (Formal and Informal Education)-

औपचारिक शिक्षा कृत्रिम होती है तथा अनौपचारिक शिक्षा स्वाभाविक एवं आकस्मिक होती है। अनौपचारिक शिखा में उद्देश्य, योजना, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, स्थान, समय तथा शिक्षण आदि पूर्व निश्चित नहीं होते जबकि औपचारिक शिक्षा में सब पहले से निश्चित होते हैं। औपचारिक शिक्षा की अपनी सीमाएँ हैं। इसका प्रमुख साधन स्कूल है जबकी अनौपचारिक शिक्षा का क्षेत्र विस्तृत है। परिवार, समुदाय, धर्म-संस्थान, खेल का मैदान आदि अनेक साधनों द्वारा इसको प्राप्त किया जा सकता है। औपचारिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक का विकास करना होता है, जबकि अनौपचारिक शिक्षा का उद्देश्य प्रमुखतः सैद्धान्तिक ज्ञान प्रदान करना होता है। इन दोनों के अन्तर को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है : -

औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा : एक तुलना

	औपचारिक शिक्षा (Formal Education	**अनौपचारिक शिक्षा (Informal Education**
क्षेत्र (Scope)	संकीर्ण	व्यापक
वातावरण (Environment)	कृत्रिम	प्राकृतिक एवं स्वाभाविक
उद्देश्य (Aim)	प्रमुखतः बालक के बौद्धिक विकास पर बल	बालक का सर्वांगीण विकास तथा बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का अधिकतम विकास
कार्यक्रम (Programme)	पूर्वनिश्चित किन्तु विविधता का अभाव	अनिश्चित एवं आकस्मिक किन्तु विविधता से युक्त
अभिकरण (Agencies)	विद्यालय, पुस्तकालय आदि	परिवार, समुदाय, धर्म, संस्थान राज्य आदि
शिक्षक (Teacher)	निश्चित व्यावसायिक व्यक्ति	माता-पिता, भाई-बहिन, मित्र- मण्डली, समुदाय के लोग, पडौसी इत्यादि
अवधि (Period)	सामान्यत: 4-5 से 25 वर्ष तक	जन्म से मृत्युपर्यन्त
स्थान (Place)	विद्यालय की चार दीवारी	सम्पूर्ण समाज
पाठ्यक्रम (Curriculum)	निर्धारित कुछ विषयों का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान	अनिर्धारित सम्पूर्ण जीवन के अनुभव अर्थात् सम्पूर्ण जीवन ही पाठ्यक्रम
शिक्षण-विधियां (Teaching methods)	कक्षा स्तर एवं विषयानुसार निश्चित	विधियां निश्चित नहीं
मूल्यांकन (Evaluation)	सत्र- समाप्ति/ पाठ्यक्रम समाप्ति पर लिखित, प्रायोगिक परीक्षायें	कोई भी निर्धारित लिखित एवं मौखिक परीक्षा नहीं। यो सम्पूर्ण जीवन भर परीक्षायें चलती रहती है।
प्रमाण-पत्र (Certificate)	परीक्षा में सफलता पर उपाधि एवं प्रमाण-पत्र देना	कोई लिखित, मुद्रित प्रमाण-पत्र / उपाधि नहीं।

औपचारिक शिक्षा के भी अपने कई प्रकार हो सकते हैं यथा – सामान्य तथा विशिष्ट शिक्षा। सामान्य शिक्षा सभी के लिये होती है और विशिष्ट शिक्षा विशिष्ट उद्देश्यों से, विशिष्ट विषयों, व्यवसायों की शिक्षा को कहा जाता है।[3]

व्यक्तिगत तथा सामूहिक शिक्षा भी अनौपचारिक शिक्षा के ही भेद हैं। व्यक्तिगत शिक्षा उस शिक्षा को कहते हैं जहाँ किसी बालक को अन्य बालकों से पृथक कर उसकी रूचि, योग्यताओं, क्षमताओं एवं आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान की जाये। इसके ठीक विपरीत व्यापक समूहों में दी जाने वाली शिक्षा जैसा कि सामान्यतः दी जाती है, सामूहिक शिक्षा कहलायेगी। चूंकि इन भेदों का समावेश औपचारिक शिक्षा के अन्तर्गत हो जाता है। अतः यहाँ इनकी विस्तृत विवेचना अभीष्ट नहीं है।

निरौपचारिक शिक्षा (Non-Formal Education)- आज शिक्षा के एक और स्वरूप का प्रचलन बहुत है जिसे 'नॉन फॉरमल एजूकेशन' कहते हैं। इसकी पृष्ठभूमि में है- वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास के कारण ज्ञान का विस्फोट। पारस्परिक तरीकों के स्थान पर आधुनिक वैज्ञानिक तरीकों का आ जाना- आज की वैज्ञानिक एवं तकनीकी संस्कृति से परम्परागत संस्कृति का सम्बद्ध हो जाना।

इस पृष्ठ भूमि के साथ शिक्षा का उद्देश्य न केवल साक्षरता रह गया है अपितु व्यक्ति का सामाजिक एवं आर्थिक विकास हो गया है।

शिक्षा को एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया मान लिया है जो कि जन्म से मृत्युपर्यन्त चलती रहती है। अतः शिक्षा न केवल विद्यालय के माध्यम से मिलती है, बल्कि व्यक्ति स्वयं अपने जीवन के अनुभवों से सीखता है। यह स्थिति उस जमाने में थी जबकि समाज में कोई विद्यालय नहीं थे किन्तु अनौपचारिक तरीकों से व्यक्ति सीखता था। अब भी कुछ लोगों की मान्यता है कि शिक्षा के सही अर्थ में वे आज के तथाकथित शिक्षितों से बेहतर शिक्षित थे। सारांश यह है कि व्यक्ति सहज स्वाभाविक रूप में अपने घर एवं परिवेश में, अधिक सीखता है अपेक्षाकृत कृत्रिम परिस्थितियों के। उदाहरण के लिये कृषक-चालक कृषि सम्बन्धी कुशलताओं का ग्रहण अपने घर पर ज्यादा अच्छी तरह एवं गति से कर लेता है अपेक्षाकृत विद्यालय में कृषि फार्म के। यह तो हुई फॉरमल तथा इनफॉरमल एजूकेशन की बात। अब एक तीसरा सम्प्रत्यय और चला है- नॉन फॉरमल एजूकेशन का। यह शिक्षा का यह स्वरूप है जिसमें न तो विद्यालयी औपचारिकताएँ हैं और न पारिवारिक स्वाभाविकता ही। यह दोनों का मिश्रित रूप है। इसमें औपचारिक शिक्षा के बन्धन-समय, स्थान आदि की दृष्टि से शिथिल किये जाते हैं तथा शिक्षा का अधिकतम कार्यक्रम अकृत्रिम अवस्था में चलाया जाता है। वस्तुतः यह पूर्व निर्धारित औपचारिकताओं के खिलाफ है किन्तु पूर्णतः अनौपचारिक भी नहीं है - यह इन दोनों के मध्य की चीज है।

हमारे देश में इस प्रकार की शिक्षा की आवश्यता महसूस की गई और इसके अन्तर्गत प्रौढ व्यावहारिक साक्षरता कार्यक्रम, पत्राचार पाठ्यक्रम, खुले विश्वविद्यालय, नॉन फॉरमल एजूकेशन फॉर ड्रॉप आउट्स आदि आयोजित किये जा रहे हैं। इसके उद्देश्य हैं समाज के सभी वर्ग के व्यक्तियों का सामाजिक एवं आर्थिक विकास। अत इसके अन्तर्गत विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक शैक्षिक कार्यक्रम चलाये जाते हैं-

निरौपचारिक शिक्षा की विशेषतायें - निरौपचारिक शिक्षा के सम्मानित स्तर का इतिहास दो दशकों से - अधिक पुराना नहीं है।

-यही शिक्षा का एक ऐसा स्वरूप है जो विश्वव्यापी आन्दोलन के समान आया है, इसके दर्शन और प्रभाव की प्रत्येक राष्ट्र में चर्चा हुई।

-विश्व की समस्त प्राचीन शिक्षा व्यवस्था का जन्म निरौपचारिक शिक्षा के रूप में ही हुआ था।

-निरौपचारिकता का मूल दर्शन, गवेषण, अन्वेषण तथा निरन्तरता है।

-यह कम खर्च और अधिक लाभ के सिद्धान्त पर आधारित है।

- इसमें स्वेच्छता का भाव प्रमुख होता है।

निरौपचारिक शिक्षा के विशिष्ट अंग

(1) व्यापकता एवं लचीलापन - इसके द्वारा सीखने के नये अवसर मिलते हैं और सीखने के अवसर सभी क्षेत्रों में समान रूप से प्रदान किये जा सकते हैं यथा- साक्षरता, खेती, उद्योग व्यापार, स्वास्थ्य तथा समाज-सेवा। सारांश यह है कि इसमें लचीलापन काफी हद तक सम्भव है।

(2) अभिकरणों की व्यापकता -इस शिक्षा की सुविधा या अवसर कोई भी अभिकरण उपलब्ध करा सकता है। चाहे वह सरकारी हो या गैर-सरकारी।

(3) पाठ्यक्रम एवं विधि की व्यापकता - इस शिक्षा– व्यवस्था में शिक्षा पूर्णनिर्धारित विधि अथवा पाठ्यक्रम के अनुसार भी उपलब्ध करायी जा सकती है और अखबार पढ़ने, धार्मिक चर्चा, भाषण या पारिवारिक रूप में भी। इस तरह पाठ्यक्रम एवं विधि की व्यापकता हो जाती है।

(4) परीक्षा एवं उपाधि डिग्री- निरौपचारिक शिक्षा परीक्षा के नियम नहीं मानती तथा यहाँ कोई डिग्री और डिप्लोमा भी नहीं होता।

(5) ज्ञान-वृद्धि एवं कौशल - दोनों ही इस शिक्षा के उद्देश्य होते हैं किन्तु औपचारिक शिक्षा से इसकी विधि भिन्न होती है।

(6) जीवनपर्यन्त चलने वाली शिक्षा- इस शिक्षा में कोई आयु बन्धन नहीं होता, अतः यह जीवनपर्यन्त चलने वाली शिक्षा होती है। इसमें सभी दृष्टि से लचीलापन है। यह सुविधाजनक शिक्षा-व्यवस्था है। यह प्रणाली श्रेष्ठ है।

शिक्षा के बदलते हुए विविध स्वरूप - शिक्षा के औपचारिक स्वरूप के ऐतिहासिक विकास क्रम के समझे बिना भी शिक्षा के अर्थ का ग्रहण अपूर्ण ही रहेगा, अतः विकास क्रम में शिक्षा ने क्या-क्या स्वरूप धारण किए हैं उसकी विवेचना यहाँ की जा रही है -

ज्ञान-केन्द्रीत शिक्षा- औपचारिक शिक्षा के प्रारम्भिक काल में ज्ञान को शिक्षा का लक्ष्यमान लिया गया। भारतीय दार्शनिकों ने भी ज्ञान को श्रेष्ठ स्थान देकर शिक्षा को इस ओर आकृष्ट किया क्योंकि ज्ञान के माध्यम से ही शिक्षा के अन्तिम लक्ष्य-मोक्ष की प्राप्ति से बताई गई है। 'ज्ञान मनुजस्य तृतीय नेत्रम्' तथा 'नहीं ज्ञानेन सदृशम् पवित्रमहि विद्यते' की उक्तियां ज्ञान की महत्ता पर प्रकाश डालती है। यह शिक्षा– क्षेत्र में 'ज्ञान' की उच्चतम अवस्था थी। इस ज्ञान का सम्बन्ध पाठ्यक्रमीय विषयों से संबद्ध ज्ञान से नहीं था। यहाँ ज्ञान अविद्या को दूर करने वाला, सत्य के तत्व को बताने वाला, उसके निकट ले जाने वाला ज्ञान था।

ज्ञान-प्रधान शिक्षा और विचार- ग्रीक देश में प्लेटो द्वारा विचार की सनातन एवं चिरन्तन सत्ता की ओर ध्यान आकृष्ट करने से ज्ञान चिरन्तन विचार का प्रतीक बन गया तथा शिक्षा का एकमात्र केन्द्र विचार-प्रधान ज्ञान बन गया। प्लेटो आदि आदर्शवादियों की मान्यता थी कि जगत अमूर्त विचारों से निर्मित है भौतिक स्थूल पदार्थों से नहीं। मनुष्य परिवर्तनशील हैं। भौतिक जगत भी परिवर्तनशील है और समाज भी अस्थाई है, अतः इनमें से कोई भी शिक्षा का केन्द्र नहीं बन सकता। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका कोई स्थाई आधार होना चाहिये। विचार चिरन्तन है, विचार ही शिक्षा के आधार हो सकते हैं। अतः इस मान्यता के अनुक्रम में मानसिक अनुशासन तथा मानसिक शक्तियों के सिद्धान्त प्रकाश में आये। इन सिद्धान्तों के अनुसार यह माना गया कि स्फूर्ति, तर्क कल्पना आदि शक्तियों से हमारा मस्तिष्क बना हुआ है जिन्हें साहित्य, गणित, तर्कशास्त्र, व्याकरण, काव्यशास्त्र, साहित्य आदि विषयों के अध्ययन द्वारा पैनापन दिया जा सकता है। परिणामतः मानसिक अनुशासन हेतु इन विषयों का अध्ययन किया जाने लगा।[4]

उदार शिक्षा (Liberal Education)- पश्चिम में इस प्रकार की ज्ञान प्रधान शिक्षा को उदार शिक्षा का नाम दिया जाने लगा क्योंकि इस प्रकार की शिक्षा स्वतन्त्र नागरिक के व्यक्तित्व विकास की आवश्यकता थी. दासों के लिए नहीं। दासों के लिये तर्क, चिन्तन के विकास की आवश्यकता नहीं थी। ये गुण स्वतन्त्र नागरिक के लिये ही आवश्यक थे स्वतन्त्र नागरिक के पास ही इस प्रकार की बौद्धिक शिक्षा प्राप्त करने का अवकाश भी था। दास प्रथा समाप्त होने के साथ-साथ इस प्रकार का भेद तो मिटता गया किन्तु लिबरल एजूकेशन बनाम वोकेशनल एजूकेशन का द्वंद ग्रीक आदि देशों में रह गया।

ज्ञान-प्रधान शिक्षा का अत्यन्त विकृत स्वरूप विषय-केंद्रीय शिक्षा (Subject Centred) – परीक्षा केंद्रीत (Examination Centred) शिक्षा में परिलक्षित हुआ। जहाँ विषय, परीक्षा एवं शिक्षक ही प्रमुख हो गए। बालक का व्यक्तित्व गौण हो गया। इसकी घोर प्रतिक्रिया हुई और बीसवी शताब्दी के प्रथम दशक में बाल केंद्रीत शिक्षा (Child Centred) का आन्दोलन शुरू हुआ। रूसो तथा अन्य प्रकृतिवादी दार्शनिकों ने शिक्षा में बालक के उपेक्षित स्थान को चुनौति दी। बाल- केंद्रीत शिक्षा का नारा दिया तथा उन्होंने पढ़ाई-लिखाई एवं कृत्रिम अवस्था में शिक्षा का विरोध किया। इनका कहना था कि बालक स्वयं स्वानुभव से सीखता है. उसे सीखने की स्वतन्त्रता दी जानी चाहिये। प्राकृतिक एवं स्वतन्त्र वातावरण में ही बालक की प्रकृति प्रदत्त शक्तियों का विकास सम्भव है। अतः शिक्षा का केन्द्र विषय से बदलकर बालक हो गया। पुराना वाक्य 'शिक्षक लैटिन पढ़ाता है।' बदलकर नये रूप में यो प्रस्तुत किया जाने लगा 'जॉन लैटिन पढ़ता' है। बालक की योग्यता, क्षमता, रूचियों के अनुसार शिक्षा दिये जाने का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। शिक्षा में मनोवैज्ञानिक आन्दोलन ने भी बाल-केन्द्रीत शिक्षा के आन्दोलन को बल प्रदान किया। परिणामतः विषय गौण हो गये। पाठ्यक्रम बालक की आवश्यकता, योग्यता, क्षमता, रुचियों के अनुसार बनाया जाने लगा क्योंकि पाठ्यक्रम केवल विकास का साधन मात्र रह गया। प्रमुख हो गया बालक का विकास। इस आन्दोलन के एक दशक बाद, एक ओर अमेरिका में आर्थिक मन्दी का युग आ रहा था तो दूसरी ओर जॉन डीवी द्वारा शिक्षा– प्रक्रिया में समाज की महत्वपूर्ण भूमिका को स्थापित किया जा रहा था। इन सबके संयोग से शिक्षा का नया केन्द्र उभरकर सामने आया। यह था बालक के स्थान पर 'समुदाय' और इस प्रकार की शिक्षा को समुदाय– केन्द्रीत शिक्षा का नाम दिया गया।

समुदाय- केन्द्रीत– शिक्षा (Community Centered Education) -अमेरिका में चले शिक्षा के इस नये आन्दोलन ने शिक्षा का केन्द्र समुदाय को बनाने पर बल दिया। इनकी मान्यता यह थी कि व्यक्ति का विकास सामुदायिक क्रिया-कलापों में भाग लेकर ही हो सकता है। इसके अतिरिक्त शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति– विकास ही नहीं, वस्तुतः सामुदायिक विकास भी है। अतः शिक्षा समुदाय की आवश्यकताओं, क्षमताओं एवं रूचियों के अनुरूप होनी चाहिये और शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिये सम्बन्धित समुदाय के जीवन का अधिकतम सम्भव विकास । इस प्रकार की शिक्षा में समुदाय की आर्थिक, सामाजिक, स्वास्थ्य सम्बन्धी तथा अन्य समस्यायें अध्ययन का केन्द्र बनती है। पाठ्यक्रम सामुदायिक आवश्यकताओं एवं आकाक्षाओं की पूर्ति करने वाला होता है। विद्यालय, सामुदायिक क्रिया-कलापों का केन्द्र होता है। विद्यालय के भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का उपयोग समुदाय के लिए किया जाता है तथा समुदाय के भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का उपयोग विद्यालय अपने विकास के लिए कर सकता है। विद्यालय तथा समुदाय दोनों का लक्ष्य अधिकतम सामुदायिक विकास करना होता है, व्यक्ति तथा समुदाय का विकास अन्योनाश्रित माना जाता है।

सन्दर्भ सूची :-

1. डेवी, जॉन, डेमोक्रेसी एण्ड एज्यूकेशन, दी मेकमिलन कम्पनी, न्यूयॉर्क, 1946, पृ.46

2. डेवी, जॉन, वही, पृ. 57

3. शर्मा, डी.एल., शिक्षा तथा भारतीय समाज, आर.एल. बुक डिपो, मेरठ, 1994, पृ. 13

4. शर्मा, डी. एल., वही पृ. 18